

ये अव्यक्त इशारे - जनवरी 2026

“इस अव्यक्ति मास में बन्धनमुक्त रह जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो”

- 01.** बापदादा चाहते हैं - मेरा एक एक बच्चा मुक्ति-जीवनमुक्ति के वर्से के अधिकारी बनें। अभी के अभ्यास की सतयुग में नेचुरल लाइफ होगी लेकिन वर्से का अधिकार अभी संगम पर है इसलिए अगर कोई भी बंधन खींचता है तो कारण सोचो और निवारण करो।
- 02.** जीवन में रहते, समय नाजुक होते, परिस्थितियाँ, समस्यायें, वायुमण्डल डबल दूषित होते हुए भी उसके प्रभाव से मुक्त, जीवन में रहते इन सर्व भिन्न-भिन्न बन्धनों से मुक्त रहना है। एक भी सूक्ष्म बन्धन नहीं हो। ऐसा हर एक ब्राह्मण बच्चे को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनना है। संगमयुग पर ही इस जीवनमुक्त स्थिति की प्रालब्ध का अनुभव करना है।
- 03.** मैजॉरिटी बच्चों ने अभी लोहे की जंजीरें तो काट ली हैं लेकिन बहुत महीन और रॉयल धागे अभी भी बंधे हुए हैं। कई पर्सनैलिटी फील करने वाले हैं, स्वयं में अच्छाईयां हैं नहीं लेकिन महसूस ऐसे होती हैं कि हम बहुत अच्छे हैं। हम बहुत आगे बढ़ रहे हैं। यह जीवन-बन्ध के धागे मैजॉरिटी में हैं, बापदादा अब इन धागों से भी मुक्त, जीवनमुक्त देखना चाहते हैं।
- 04.** अभी जो भी परिस्थितियां आ रही हैं या आने वाली हैं, प्रकृति के पांचों ही तत्व अच्छी तरह से हिलाने की कोशिश करेंगे परन्तु जीवनमुक्त विदेही अवस्था की अभ्यासी आत्मा अचल-अडोल पास विद आनर होकर सब बातें सहज पास कर लेगी इसलिए निरन्तर कर्मयोगी, निरन्तर सहज योगी, निरन्तर मुक्त आत्मा के संस्कार अभी से अनुभव में लाने हैं।
- 05.** अभी आप सब ऐसे मुक्त बन मास्टर मुक्तिदाता बनो जो सर्व आत्मायें, प्रकृति, भगत मुक्त हो जाएं। अभी ब्रह्मा बाप इसी एक बात में डेट कान्सेस हैं, कि मेरा एक-एक बच्चा कब जीवन मुक्त बनेगा? ऐसे नहीं समझना कि अन्त में जीवनमुक्त बनेंगे, नहीं। बहुतकाल से जीवनमुक्त स्थिति का अभ्यास, बहुतकाल जीवनमुक्त राज्य भाग्य का अधिकारी बनायेगा।
- 06.** जब आप अभी जीवनमुक्त बनो तो आपकी जीवनमुक्त स्थिति का प्रभाव जीवनबंध वाली आत्माओं का बंधन समाप्त करेगा। तो वह डेट कब होगी जब सब जीवनमुक्त होंगे? कोई बंधन नहीं। सब बन्धनों में पहला एक बंधन है—देह भान का बंधन, उससे मुक्त बनो। देह नहीं तो दूसरे बंधन स्वतः ही खत्म हो जायेंगे।
- 07.** अपने को वर्तमान समय मैं टीचर हूँ, मैं स्टूडेंट हूँ, मैं सेवाधारी हूँ, इस समझने के बजाए अमृतवेले से यह अभ्यास करो कि मैं श्रेष्ठ आत्मा ऊपर से आई हूँ – इस पुरानी दुनिया में, पुराने शरीर में सेवा के लिए। मैं आत्मा हूँ – यह पाठ अभी और पक्का करो। मैं सेवाधारी हूँ, यह पाठ पक्का है लेकिन मैं आत्मा सेवाधारी हूँ यह पाठ पक्का कर लो तो जीवनमुक्त बन जायेंगे।
- 08.** ब्राह्मण जीवन का मजा जीवनमुक्त स्थिति में है। न्यारा बनना अर्थात् मुक्त बनना। संस्कार के ऊपर भी झुकाव नहीं। क्या करूँ, कैसे करूँ, करना नहीं चाहते थे लेकिन हो गया – यह है जीवन-बन्ध बनना। इच्छा नहीं थी लेकिन अच्छा लग गया, शिक्षा देनी थी लेकिन क्रोध आ गया – यह है जीवन-बन्ध स्थिति। ब्राह्मण अर्थात् जीवनमुक्त। कभी भी ऐसे किसी बंधन में बंध नहीं सकते।

09. ज्ञान-खजाने द्वारा इस समय ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना है। जो भी दुःख और अशान्ति के कारण हैं, विकार हैं उनसे मुक्त होना है। अगर कोई विकार आते भी हैं तो विजयी बन जाना है, हार नहीं खानी है। अनेक व्यर्थ संकल्प और विकल्प, विकर्मों से मुक्त बनना - यही जीवनमुक्त अवस्था है।

10. ब्राह्मण सो फरिश्ता अर्थात् जीवनमुक्त, जीवन-बंध नहीं। न देह का बंधन, न देह के संबंध का बंधन, न देह के पदार्थों का बंधन। अगर अपनी देह का लगाव खत्म किया तो देह के संबंध और पदार्थ का बंधन आपेही खत्म हो जायेगा। ऐसे नहीं कोशिश करेंगे। 'कोशिश' शब्द ही सिद्ध करता है कि पुरानी दुनिया की कशिश है। इसलिए 'कोशिश' शब्द समाप्त करो। देहभान को छोड़ो।

11. वैसे बंधना किसी को भी अच्छा नहीं लगता है, लेकिन जब परवश हो जाते हो तो बंध जाते हो। तो चेक करो कि परवश आत्मा हैं या स्वतन्त्र हैं? जीवन-मुक्ति का मजा तो अभी है। भविष्य में जीवन-मुक्त और जीवन-बन्ध का कान्द्रास्ट नहीं होगा। इस समय के जीवनमुक्त का अनुभव श्रेष्ठ है। जीवन में हैं लेकिन मुक्त हैं, बन्धन में नहीं हैं।

12. आप लोगों का स्लोगन है - मुक्ति और जीवन-मुक्ति हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। परमधाम में तो यह पता ही नहीं पड़ेगा कि मुक्ति क्या है, जीवन-मुक्ति क्या है, इसका अनुभव इस ब्राह्मण जीवन में अभी करना है।

13. जब आपकी रचना कमल पुष्प जल में रहते जल के बन्धन से मुक्त है। तो जब रचना में यह विशेषता है तो क्या मास्टर रचता में नहीं हो सकती? जब कभी बंधन में फंस जाओ तो अपने सामने कमल पुष्प का दृष्टान्त रखो कि जब कमल पुष्प न्यारा-प्यारा बन सकता है तो क्या मास्टर सर्वशक्तिवान नहीं बन सकते! तो सदा बन जायेंगे।

14. ब्राह्मण जीवन में देह का बंधन, संबंध का बंधन, साधनों का बंधन - सब खत्म हो गया ना! कोई बंधन नहीं। बंधन अपने वश में करता है और संबंध स्नेह का सहयोग देता है। तो देह के सम्बन्धियों का देह के नाते से सम्बन्ध नहीं लेकिन आत्मिक संबंध है। ऐसे ब्राह्मण अर्थात् जीवन-मुक्त।

15. जब तक कर्मेन्द्रियों का आधार है तो कर्म तो करना ही है, लेकिन कर्म-बन्धन नहीं, कर्म-सम्बन्ध। जीवन-मुक्त अवस्था अर्थात् सफलता भी ज्यादा और कर्म का बोझ भी नहीं। जो मुक्त हैं वो सदा ही सफलतामूर्त हैं। जीवन-मुक्त आत्मा सदा फलक से कहेगी कि विजय निश्चित है, सफलता जन्मसिद्ध अधिकार है।

16. सदा जीवन-मुक्त रहने का सहज साधन है - 'मैं' और 'मेरा बाबा'! क्योंकि मेरे-मेरे का ही बंधन है। मेरा बाबा हो गया तो सब मेरा खत्म। जब 'एक मेरा' में 'सब मेरा-मेरा' समाप्त हो गया, तो बंधन-मुक्त हो गये। तो यही याद रखना कि हम ब्राह्मण जीवन-मुक्त आत्मा हैं।

17. जो परमात्म ज्ञानी बच्चे हैं, उन्हें ज्ञान का फल मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा संगम पर ही प्राप्त होता है। ज्ञान अर्थात् समझ। समझदार हर कर्म करते हुए सदा स्वयं को बन्धनमुक्त, सर्व आकर्षणों से मुक्त बनाने की समझ रखता है। उनके हर संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध और सम्पर्क में मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्टेज रहती है, जिसको न्यारा और प्यारा कहते हैं।

18. जैसे बाप सदा स्वतंत्र है - ऐसे बाप समान बनो। बापदादा अब बच्चों को परतंत्र देख नहीं सकते। अगर स्वयं को स्वतंत्र नहीं कर सकते हो, स्वयं ही अपनी कमजोरियों में गिरते रहते हो तो विश्व परिवर्तक कैसे बनेंगे! अब इस स्मृति को बढ़ाओ कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ, इससे सहज सर्व पिंजड़ों से मुक्त उड़ता पंछी बन जायेंगे।।

19. अपने स्थूल और सूक्ष्म बन्धनों की लिस्ट सामने रखो। लक्ष्य रखो कि मुझे बन्धनमुक्त बनना ही है। “अब नहीं तो कब नहीं” - सदा यही पाठ पक्का करो। “स्वतंत्रता ब्राह्मण जन्म का अधिकार है” - अपना जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त कर जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो। जब अपने को गृहस्थी समझते हो तब गृहस्थी का जाल होता। गृहस्थी बनना माना जाल में फँसना। ट्रस्टी अर्थात् मुक्त।

20. अभी समय की बचत, संकल्पों की बचत, शक्ति के बचत की योजना बनाकर बिन्दी रूप की स्थिति को बढ़ाओ। जितना बिन्दी रूप की स्थिति होगी उतना कोई भी ईविल स्प्रिट वा ईविल संस्कार का फोर्स आप लोगों पर वार नहीं करेगा, आप भी उनसे मुक्त रहेंगे और आपका शक्तिरूप उन्हीं को भी मुक्त करेगा।

21. जैसे और स्थूल वस्तुओं को जब चाहो तब लो और जब चाहो तब छोड़ दो। वैसे देह के भान को जब चाहो तब छोड़कर देही-अभिमानि बन जाओ – यह प्रैक्टिस इतनी सरल हो, जितनी कोई स्थूल वस्तु की सहज होती है। रचयिता जब चाहे रचना का आधार ले, जब चाहे तब रचना के आधार को छोड़ दे, जब चाहे तब न्यारे, जब चाहें तब प्यारे बन जायें - इतना बन्धनमुक्त बनो।

22. स्वयं को बन्धनों से मुक्त करने के लिए अपनी चलन को और जो कड़ा संस्कार है उसे चेन्ज करो। बंधन डालने वाले अपना काम करें, आप अपना काम करो। उनके काम को देख घबराओ नहीं। जितना वो अपना काम फोर्स से कर रहे हैं, आप अपना फोर्स से करो। उनके गुण उठाओ कि वह कैसे अपना कर्तव्य कर रहे हैं, आप भी करो। अपने को बन्धनों से मुक्त करने की युक्ति रचो।

23. जब सेवा में वा अपने पुराने संस्कारों को परिवर्तन करने में सफलता नहीं मिलती है तो कोई न कोई विघ्न के वश हो जाते हो। फिर उनसे मुक्त होने की इच्छा रखते हो, लेकिन बिना शक्ति के यह इच्छा पूर्ण नहीं हो सकती इसलिए अंलकारी रूप बनो। शक्तिरूप धारण करो।

24. मास्टर त्रिकालदर्शी बनकर हर कर्म, हर संकल्प करो वा वचन बोलो, तो कोई भी कर्म व्यर्थ वा अनर्थ वाला नहीं हो सकता। त्रिकालदर्शी अर्थात् साक्षीपन की स्थिति में स्थित होकर इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करेंगे तो कर्म के वशीभूत नहीं होंगे। सदा कर्म और कर्म के बन्धन से मुक्त बन अपनी ऊंची स्टेज को प्राप्त कर लेंगे।

25. ज्ञान-स्वरूप मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिमान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो युक्तियुक्त नहीं है, वह कर लेते हो तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्मबन्धन से पदमगुणा ज्यादा है। इस कारण बन्धनयुक्त आत्मा स्वतन्त्र न होने कारण जो चाहे वह नहीं कर पाती। इसलिए युक्तियुक्त कर्म द्वारा मुक्ति को प्राप्त करो।

26. अपने संकल्पों के तूफान वा कोई भी सम्बन्ध द्वारा, प्रकृति वा समस्याओं द्वारा तूफान व विघ्न आते हैं तो उनसे मुक्ति पाने के लिए योग युक्त, युक्ति-युक्त बनो। जब तक योगयुक्त नहीं तब तक विघ्नों से युक्त हो।

27. जीवन-बन्ध के साथ ही जीवन-मुक्त का अनुभव होता है, वहाँ तो जीवन-बन्ध की बात ही नहीं। वहाँ तो सिर्फ उसी प्रारब्ध में होंगे, मुक्तिधाम की मुक्ति का अनुभव जो अभी कर सकते हो वह वहाँ नहीं कर सकेंगे इसलिए संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करो। वर्से के अधिकारी तो बने हो अब उसे जीवन में धारण कर पूरा लाभ उठाओ।

28. पहले अपनी देह से, देह के सम्बन्ध से और पुरानी दुनिया की स्मृति से मुक्त बनो। जब इस मुक्ति की अवस्था का अनुभव करेंगे तब मुक्त होने के बाद जीवन मुक्ति का अनुभव स्वतः होगा। तो चेक करो जीवन में रहते हुए देह, देह के सम्बन्ध और पुरानी दुनिया की आकर्षण से कहाँ तक मुक्त बने हैं?

29. जब तक किसी भी प्रकार का लगाव है, चाहे वह संकल्प के रूप में हो, चाहे सम्बन्ध के रूप में, चाहे सम्पर्क के रूप में, चाहे अपनी कोई विशेषता की तरफ हो। कोई भी लगाव बन्धन-युक्त कर देगा। वह लगाव अशरीरी बनने नहीं देगा और वह विश्व-कल्याणकारी भी बना नहीं सकेगा इसलिए पहले स्वयं लगाव मुक्त बनो तब विश्व को मुक्ति व जीवनमुक्ति का वर्सा दिला सकेंगे।

30. यदि कोई भी स्वभाव, संस्कार, व्यक्ति अथवा वैभव का बन्धन अपनी तरफ आकर्षित करता है, तो बाप के याद की आकर्षण सदैव नहीं रह सकती। कर्मातीत बनना माना सर्व कर्म बन्धनों से मुक्त, न्यारे बन, प्रकृति द्वारा निमित्त-मात्र कर्म कराना। यह न्यारे बनने का पुरुषार्थ बार-बार करते रहो। सहज और स्वतः यह अनुभूति हो कि “कराने वाला और करने वाली यह कर्मेन्द्रियाँ हैं ही अलग।”

31. स्वदर्शन चक्रधारी सो छत्रधारी बनो तो देह की स्मृति के अनेक व्यर्थ संकल्पों के चक्र से, लौकिक और अलौकिक सम्बन्धों के चक्र से, अपने अनेक जन्मों के स्वभाव और संस्कारों के चक्र से और प्रकृति के अनेक प्रकार की आकर्षण के चक्र से जब मुक्त हो जायेंगे तब अन्य आत्माओं को भी बाप से प्राप्त हुई शक्तियों द्वारा अनेक चक्करों से सहज ही छुड़ाकर जीवनमुक्त बना सकेंगे।

* * * * * ओम्शान्ति * * * * *